दसम माला, खण्ड 1, अंक 2

बुधवार, 10 जुलाई, 1991
19 आषाढ़, 1913 (शक)

# लोक सभा वाद-विवाद
# का
# हिन्दी संस्करण

## पहला सत्र

(दसवीं लोक सभा)

सत्यमेव जयते

(खण्ड 1 में अंक 1 से 10 तक हैं)

लोक सभा सचिवालय
नई दिल्ली

मूल्य : चार रुपये

[अंग्रेजी संस्करण में सम्मिलित मूल अंग्रेजी कार्यवाही और हिन्दी संस्करण में सम्मिलित मूल हिन्दी कार्यवाही ही प्रामाणिक मानी जाएगी । उनका अनुवाद प्रामाणिक नहीं माना जायेगा]

लोक सभा वाद - विवाद

का

हिन्दी संस्करण

बुधवार, 10 जुलाई, 1991 / 19 आषाढ़, 1913 (शक)

का

शुद्धि - पत्र

| पृष्ठ | पंक्ति | शुद्धि |
|---|---|---|
| विषय सूची | 5 | "अपक्ष" के स्थान पर "अध्यक्ष" पढ़िये। |
| 2 | 22 | "मत्तेमवर" के स्थान पर "मुत्तेमवार" पढ़िये। |
| 3 | 3 | "सोंकर" के स्थान पर "सोनकर" पढ़िये। |
| 3 | 8 | "पंसकुटा" के स्थान पर "पंसकुरा" पढ़िये। |
| 3 | 10 | "विश्वनधम" के स्थान पर "विश्वनाथम" पढ़िये। |
| 25 | नीचे से पंक्ति 9 | "पवन" के स्थान पर "पबन" पढ़िये। |

# विषय सूची

दशम माला, खंड 1, पहला सत्र, 1991/1913 (शक)

अंक 2, बुधवार, 10 जुलाई, 1991/19 आषाढ़, 1913 (शक)

| विषय | पृष्ठ |
|---|---|
| सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण | 1–4 |
| अध्यक्ष का निर्वाचन | 4–7 |
| अध्यक्ष महोदय को बधाईयां | 7–22 |
| श्री पी० वी० नरसिंह राव | 7–8 |
| श्री लाल कृष्ण आडवाणी | 8–10 |
| श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह | 10 |
| श्री सोमनाथ चटर्जी | 10–11 |
| श्री बी० विजयकुमार राजू | 11 |
| श्री फ्रैंक एंथनी | 11–12 |
| श्री इन्द्रजीत गुप्त | 12–14 |
| श्री पी० जी० नारायणन | 14 |
| श्री नानी भट्टाचार्य | 14–15 |
| श्री मोरेश्वर सावे | 15 |
| श्री चित्त बसु | 15–16 |
| श्री इब्राहीम सुलेमान सेठ | 16–18 |
| श्रीमती दिल कुमारी भण्डारी | 18 |
| श्री शिबू सोरेन | 18 |
| डा० जयन्त रंगपो | 18–19 |
| श्री मुहीराम सेकिया | 19 |
| श्री के० पी० उन्नीकृष्णन | 19–20 |
| श्री याइमासिंह युमनाम | 20 |
| श्री चन्द्रशेखर | 20–21 |
| प्रधान मंत्री और सदन के नेता का परिचय | 23 |
| मंत्रियों का परिचय | 23–25 |

287/लो०स०/91—1

# लोक सभा

**बुधवार, 10 जुलाई, 1991/19 आषाढ़, 1913 (शक)**

**लोक सभा 11 बजे म०पू० पर समवेत हुई ।**

**[सामयिक अध्यक्ष महोदय (श्री इन्द्रजीत गुप्त) पीठासीन हुए]**

## सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण

**[अनुवाद]**

**अध्यक्ष महोदय :** महासचिव उन सदस्यों के नाम पुकारें जिन्होंने शपथ नहीं ली है अथवा प्रतिज्ञान नहीं किया है ।

श्री कमलनाथ (छिन्दवाड़ा)
श्री जी० वेंकटस्वामी (पेट्डापल्ली)
श्री मनोरंजन भक्त (अण्डमान और निकोबार द्वीपसमूह)
श्री आनंद गजपति राजू पूसावति (जोब्बिली)
श्री कोनाथाला रामकृष्णा (अनकापल्ली)
श्री कासु वेंकट कृष्णारेड्डी (नरसाराओपेट)
श्री येल्लैया नंदी (सिद्दीपेट)
श्री अल्लोला इन्द्राकरन (आदिलाबाद)
श्री गद्दाम गंगा रेड्डी (निजामाबाद)
श्री चोक्काराव जुवाडी (करीमनगर)
श्री सुरेन्द्र रेड्डी रामसहायम (वारंगल)
श्री बोम्मागानी धर्म बिक्षाम (नालगोंडा)
श्री बीमिरेड्डी नरसिम्हा रेड्डी (मिरयालगुडा)
श्री वाड्डे शोभनाद्रेश्वर राव (विजयवाड़ा)
श्री अब्दुल गफूर (गोपालगंज)
श्री जार्ज फर्नांडीज (मुजफ्फरपुर)
श्री राम विलास पासवान (रोसड़ा)
श्री साइमन मारंडी (राजमहल)
श्री सुखदेव पासवान (अररिया)
श्री प्रताप सिन्हा (बांका)
श्री रामदेव राम (पलामू)

श्री रामचन्द्र बीरप्पा (बीदर)
श्री ए० वेंकटेशनायक (रायचूर)
श्री वी० कृष्णाराव (चिकबल्लापुर)
श्री के० एच० मुनिअप्पा (कोलार)
श्री जी० मोडेगोवडा (माण्डया)
श्री वी० श्रीनिवास प्रसाद (चामराजनगर)
श्री एच० डी० देवगोवडा (हसन)
श्री डी० के० नाइकर (धारवाड़ उत्तरी)
श्री पलाई के० एम० मैथ्यू (इदुक्की)
श्रीमती विजया राजे सिंधिया (गुना)
कुमारी पुष्पा देवी सिंह (रायगढ़)

[11.31 म० पू०]

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी पीठासीन हुए]

श्री खेलन राम जांगडे (बिलासपुर)
श्री सूरजभानु शिवभानु सोलंकी (धार)
श्री सुधीर सीताराम सावन्त (राजापुर)
श्री गोविन्द राव निकम (रत्नगिरि)
श्री ए० आर० अन्तुले (कोलाबा)
डा० पवार वसंत निबंरटी (नाशिक)
श्री मेघे दत्ताजी राघोगजी (नागपुर)
श्री प्रफुल मनोहरभाई पटेल (भंडारा)
श्री मत्तेमवर विलास बाबूराम (चिमुर)
श्री सादुल धरमान्ना मण्डेया (सोलापुर)
श्री गाडख यशवन्तराव कंकरराव (अहमदनगर)
श्री अजीत अनन्तराव पवार (बारामती)
श्री भोंसले प्रतापराव बाबूराव (सतारा)
श्री माणे बालासाहिब उर्फ राजाराम शंकरराव (इचलंकरांजे)
श्री लोकनाथ चौधरी (जगतसिंहपुर)
श्री खगपति प्रधानी (नौरंगपुर)
डा० कृपासिन्धु भोई (सम्बलपुर)
श्रीमती मारगथम चन्द्रशेखर (श्री पेरुम्बुदुर)
श्री के० वी० थंगका बालु (धर्मपुरी)
श्री सी० के० कुप्पुस्वामी (कोयम्बटूर)
श्री ए० जी० एम० रामबाबू (मदुराई)
श्री वी० राजेश्वरन (रामनाथपुरम)
श्रीमती महारानी बिभू कुमारी देवी (त्रिपुरा पूर्व)
श्री मानवेन्द्र शाह (टिहरी गढ़वाल)

श्री जीवन (अल्मोड़ा)

श्री चन्द्रशेखर (बलिया)

श्री राजनाथ सोंकर शास्त्री (सैदपुर)

श्री अजित सिंह (बागपत)

श्री इंद्रजीत (दार्जिलिंग)

श्री चित्त बसु (बशीरहाट)

श्री अमल दत्त (डायमण्ड हारबर)

श्रीमती गीता मुखर्जी (पंसकुटा)

श्री हरधन राय (आसनसोल)

श्री एम० वी० वी० एस० मूर्ति (विशाखापटनम)

श्री थोटा सुब्बा राव (काकिनाडा)

[12.00 मध्याह्न]

श्री के० वी० आर० चौधरी (राजामुन्दरी)

श्री बाला योगी सी० एम० सी० (अमालापुरम)

श्री विजयकुमार राजू, भूपति राजू (नारसपुर)

श्री बोल्ला बुल्लिरामय्या (इलुरु)

श्री के० पी० रेड्डया (मछली पटनम)

श्री उमा रेड्डी वेंकटेश्वरालु (तेनाली)

श्री लालजन बाशा, एस० (गुन्टूर)

श्री डी० वेंकटेश्वर राव (वापतला)

श्री विश्वनधम कैनिथी (श्रीकाकुलम)

श्री आर० श्रीधरन (मद्रास दक्षिण)

श्री बिश्वनाथ प्रताप सिंह (फतेहपुर)

श्री आर० दानुषकोड़ी अथियान (त्रिचेन्डुर)

श्री मनोरंजन सुर (बसीरहाट)

[हिन्दी]

**सभापति महोदय** : सम्मानित सदस्यगण, शपथ विधि का आज का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, अब सदन तीन बजे अपराह्न यहीं पर मिलेगा। सदन स्थगित किया जाता है।

[12.15 म०प०]

तत्पश्चात् लोक-सभा मध्याह्न भोजन के लिए 3.00 म०प० तक के लिए स्थगित हुई।

[3.00 म०प०]

मध्याह्न भोजन के पश्चात् लोक-सभा 3.00 म०प० पर पुनः समवेत हुई ।

[सामयिक अध्यक्ष (श्री इन्द्रजीत गुप्त) पीठासीन हुए]

[अनुवाद]

**अध्यक्ष महोदय** : महासचिव उन सदस्यों के नाम पुकारें जिन्होंने शपथ नहीं ली है अथवा प्रतिज्ञान नहीं किया है ।

## सदस्यों द्वारा शपथ ग्रहण--(जारी)

श्री रामचन्द्र रथ (आसका)

[3.00 म०प०]

## अध्यक्ष का निर्वाचन

**अध्यक्ष महोदय** : मेरे विचार से ऐसा कोई सदस्य उपस्थित नहीं है जिसने अभी तक शपथ ग्रहण नहीं की है । इस लिए हम अब अगला विषय आरम्भ करते हैं ।

हम लोक सभा के अध्यक्ष का निर्वाचन संबंधी प्रस्ताव शुरू करते हैं । श्री लाल कृष्ण आडवाणी अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करें ।

**श्री लाल कृष्ण आडवाणी** (गांधी नगर) : महोदय, मैं प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं करना चाहता ।

**अध्यक्ष महोदय** : श्रीमती शीला कौल.....श्री के० आर० नारायणन उपस्थित नहीं हैं, वह अनुपस्थित हैं ।

श्री अर्जुन सिंह

**मानव संसाधन विकास मंत्री (श्री अर्जुन सिंह)** : महोदय, मैं प्रस्ताव करता हूं :

"कि श्री शिवराज वी० पाटिल, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा का अध्यक्ष चुना जाये" ।

**श्री पी०जी० नारायणन** (गोविचेट्टिपालयम) : महोदय, मैं प्रस्ताव का समर्थन करता हूं ।

**अध्यक्ष महोदय** : प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ

"कि श्री शिवराज वी० पाटिल, जो इस सभा के सदस्य हैं, को इस सभा का अध्यक्ष चुना जाये" ।

**अध्यक्ष महोदय** : श्री ए० आर० अन्तुले ने पहले ही कह दिया है कि वह प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं कर रहे हैं ।

श्री बी० शंकरानन्द

**पैट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री (श्री बी० शंकरानन्द)** : महोदय, मैं प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं कर रहा हूं ।

**श्री लाल कृष्ण आडवाणी** : आप उस प्रस्ताव को रखिये जिसे प्रस्तुत किया गया है ।

**अध्यक्ष महोदय** : यह नियम नहीं है । सभी प्रस्तावों को प्रस्तुत किया जाए और बाद में यदि आवश्यक हो तो उन पर एक-एक कर वे मतदान कराया जाए ।

श्री वसुदेव आचार्य अपना प्रस्ताव प्रस्तुत करें ।

**श्री वसुदेव आचार्य** (बांकुरा) : महोदय, लोक सभा के अध्यक्ष का पद एक ऊंचा संवैधानिक पद है इसकी गरिमा को और बढ़ाया जाए . . . . . (**व्यवधान**)

**अध्यक्ष महोदय** : आप या तो प्रस्ताव प्रस्तुत कीजिए अथवा कहिए कि आप प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं करेंगे ।

**श्री वसुदेव आचार्य** : महोदय, अध्यक्ष को सभा के सभी पक्षों का पूरा समर्थन मिलना चाहिए । पिछले आम चुनावों के परिणामों से यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया है कि किसी भी पार्टी अथवा मोर्चे को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला है . . . . . (**व्यवधान**)

**अध्यक्ष महोदय** : आप अपना प्रस्ताव प्रस्तुत कर रहे हैं अथवा नहीं ?

**श्री वसुदेव आचार्य** : इस नयी स्थिति में एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता है । इसलिए हमने अध्यक्ष पद के लिए श्री रवि राय के नाम का प्रस्ताव किया था . . . . . (**व्यवधान**)

**अध्यक्ष महोदय** : श्री आचार्य, आप प्रस्ताव प्रस्तुत कर रहे हैं अथवा नहीं ?

**श्री वसुदेव आचार्य** : हम चाहते थे कि इस नयी स्थिति में आम सहमति जुटायी जाए । महोदय, कांग्रेस (इ) और भाजपा दोनों ने हमसे सम्पर्क स्थापित किया था . . . . . (**व्यवधान**)

**अध्यक्ष महोदय** : कार्यवाही वृतान्त में कुछ भी सम्मिलित नहीं किया जाए . . . . . (**व्यवधान**)

**अध्यक्ष महोदय** : श्री आचार्य, आप अपना प्रस्ताव प्रस्तुत कर रहे हैं अथवा नहीं ?

**[व्यवधान]***

**अध्यक्ष महोदय** : श्री आचार्य, कृपया बात समाप्त कीजिए । आप भाषण नहीं दे सकते । आप अपना प्रस्ताव प्रस्तुत कर रहे हैं अथवा नहीं ?

**श्री वसुदेव आचार्य** : ऐसी परिस्थितियों में मैं प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं करना चाहता . . . . (**व्यवधान**)

**[हिन्दी]**

**श्री मदन लाल खुराना** (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्ष जी, मेरा 'प्वाइंट आफ आर्डर' है कि माननीय सदस्य ने अभी जो कुछ सदन में कहा, वह रिकार्ड में नहीं जाना चाहिये . . . . . (**व्यवधान**)

*कार्यवाही-वृतान्त में सम्मिलित नहीं किया गया ।

**अध्यक्ष महोदय** : नहीं, रिकार्ड में नहीं जाएगा

**[व्यवधान]**

[अनुवाद]

**अध्यक्ष महोदय** : कार्यवाही-वृतान्त में कुछ सम्मिलित नहीं किया जा रहा है ।

[हिन्दी]

**श्री मदन लाल खुराना** : मेरा निवेदन है कि इस समय कोई स्टेटमैंट नहीं हो सकता । अत: माननीय सदस्य ने सदन में जो स्टेटमैंट दिया है, उसे कार्यवाही से निकाल दिया जाए ।

[अनुवाद]

**अध्यक्ष महोदय** : इसे कार्यवाही-वृतान्त में सम्मिलित नहीं किया जा रहा है . . .

**[व्यवधान]**

**अध्यक्ष महोदय** : कृपया अपना स्थान ग्रहण कीजिए . . . . . .

**[व्यवधान]**

[हिन्दी]

**अध्यक्ष महोदय** : आप कृपया सदन की कार्यवाही चलने दीजिए, बीच में आप ऐसा मत करिये । यह नियम के खिलाफ है । इसलिये मेहरबानी करके आप बैठ जाइये ।

**[व्यवधान]**

[अनुवाद]

**एक माननीय सदस्य** : महोदय, व्यवस्था का प्रश्न है ।

[हिन्दी]

**अध्यक्ष महोदय** : नहीं, अभी कोई प्वाइंट ऑफ आर्डर नहीं हो सकता ।

[अनुवाद]

श्री आचार्य, आप प्रस्ताव प्रस्तुत कर रहे हैं अथवा नहीं ?

**श्री वसुदेव आचार्य** : महोदय, मैंने पहले ही कह दिया कि मैं प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं कर रहा हूं ।

**अध्यक्ष महोदय** : ठीक है । श्री राम लखन सिंह यादव, क्या आप अपना प्रस्ताव प्रस्तुत कर रहे हैं ?

**श्री राम लखन सिंह यादव** : (आरा) : मैं प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं कर रहा हूं ।

**अध्यक्ष महोदय** : श्री चुन चुन प्रसाद यादव । श्री के० पी० उन्नीकृष्णन ।

**श्री के०पी० उन्नीकृष्णन (वडागरा)** : महोदय, मैं प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं करना चाहता हूं ।

**अध्यक्ष महोदय** : श्री सूरज मंडल ।

[हिन्दी]

**श्री सूरज मंडल** (गौड्डा) : जब दो अलग अलग दिलों का मिलन हो गया है तो मैं अपने मोशन को मूव करना नहीं चाहता ।

[अनुवाद]

**अध्यक्ष महोदय** : अब सभा के विचारार्थ केवल एक प्रस्ताव है जिसको श्री अर्जुन सिंह ने प्रस्तुत किया है तथा श्री पी० जी० नारायणन ने जिसका समर्थन किया है। मैं प्रस्ताव को सभा के मतदान के लिये रखता हूं।

प्रश्न यह है :

"कि श्री शिवराज वी० पाटिल को, जो इस सभा के सदस्य हैं, इस सभा का अध्यक्ष चुना जाए।"

**प्रस्ताव स्वीकृत हुआ**

**अध्यक्ष महोदय** : प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

मैं घोषणा करता हूं कि श्री शिवराज वी० पाटिल विधिवत् इस सभा के अध्यक्ष चुन लिये गये हैं। अब मैं उन्हें सहर्ष आमंत्रित करता हूं कि वह आकर अध्यक्ष का आसन ग्रहण करें।

**(सभा के नेता श्री अर्जुन सिंह और विपक्ष के नेता श्री लाल कृष्ण आडवाणी श्री शिवराज वी० पाटिल को अध्यक्षपीठ तक ले गये)**

---

[3.11 म० प०]

**[अध्यक्ष महोदय (श्री शिवराज वी० पाटिल) पीठासीन हुए।]**

## अध्यक्ष महोदय को बधाईयां

**अध्यक्ष महोदय** : हमारे पास उन सदस्यों की सूची है जिन्हें बोलना है। मैं प्रधान मंत्री से निवेदन करता हूं कि वे अब बोलें।

**प्रधान मन्त्री (श्री पी० वी० नरसिंह राव)** : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल तथा अपनी ओर से आपके सर्वसम्मति से इस सभा के अध्यक्ष चुने जाने पर आपको बधाई देता हूं।

विगत में आपने इस तरह के उत्तरदायित्व को बहुत ही अच्छी तरह निभाया है। हम सभी जानते हैं कि आप महाराष्ट्र विधान सभा, जो भारत की सबसे बड़ी विधान सभाओं में से एक है, के अध्यक्ष रह चुके हैं। विगत में आप अपनी क्षमता का भलीभांति परिचय दे चुके हैं तथा आपने विभिन्न विषम परिस्थितियों को बड़े सहज ढंग से हल किया है। सभा के संचालन के संबंध में आपका अनुभव इस सभा की कार्यवाही के संचालन में तो सहायक होगा ही साथ ही हम भी उस प्रकार कार्य कर सकेंगे जिसकी हमसे अपेक्षा की जाती है।

हम ऐसे समय समवेत हो रहे हैं जब कि देश विभिन्न प्रकार की कठिन परिस्थितियों का सामना कर रहा है। इस संबंध में हमें तत्परता से कार्य करना होगा जो इस कठिन समय की मांग है और हमें सामूहिक ढंग से और दृढ़ संकल्प होकर कार्य करना होगा ताकि देश के सामने जो चुनौतियां हैं उनका मुकाबला किया जा सके। विशेषकर इस सभा में लोग हम से यह अपेक्षा करते हैं कि हम समर्पण की भावना से तथा एक निष्ठ होकर कार्य करें और यह सब एक गरिमामय ढंग से किया जाना चाहिये। हमें लोगों की इन आकांक्षाओं को ध्यान में रखना होगा और अध्यक्ष महोदय मुझे विश्वास है कि आपके सुयोग्य मार्ग दर्शन में इस सभा की कार्यवाही का संचालन उत्तम होगा, लेकिन इसके साथ ही हमारा अपना प्रदर्शन भी लोगों की अपेक्षाओं के अनुरूप होगा।

मेरी यह कामना है कि आने वाले समय में आप अध्यक्ष के रूप में बड़े सफल रहें तथा इस सभा के कार्य के संचालन में आपको महान सफलता प्राप्त हो और इस प्रकार आप सहयोग और सतर्कता का नया युग लाएं। आपके सुयोग्य मार्गदर्शन में हम यह सब कर सकेंगे।

महोदय, मैं आपको पुनः बधाई देता हूं।

[हिन्दी]

**श्री लाल कृष्ण आडवाणी** (गांधीनगर) : अपनी पार्टी की ओर से और अपनी ओर से अध्यक्ष जी, मैं आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं और बधाई देता हूं। आप इस पद पर चुने गए हैं इसका मुझे आनन्द है और इस बात की विशेष खुशी है कि आपका निर्वाचन निर्विरोध हुआ है। और भी खुशी होती अगर यह निर्वाचन सर्वसम्मति से होता। कल तक लगता था कि शायद निर्विरोध निर्वाचन भी सम्भव नहीं है और चुनाव होगा और उसके आधार पर चुने जाएंगे। चाहे जिस रूप में हुआ हो लेकिन मैं विपक्ष को भी, बाकी साथियों को भी बधाई देता हूं कि कम से कम चुनाव नहीं करवाया और निर्विरोध निर्वाचन होने दिया। मैं सत्ता पक्ष को बधाई देना चाहता हूं कि उन्होंने निर्विरोध निर्वाचन की व्यवस्था करवाई। एक साथी ने बीच में व्यंग्यपूर्वक कहा था कि दो अलग-अलग दिलों का मिलन हुआ है इसलिए वे अपना प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं करना चाहते हैं। मैं समझता हूं कि पूरे सदन को और ज्यादा खुशी होती अगर सभी अलग-अलग दिल और दल मिल जाते केवल मात्र यह दो दल इस विषय पर न मिलते। यह संसदीय परम्परा इस बात की अपेक्षा करती है कि सब दल अपनी-अपनी बात आग्रहपूर्वक रखें, अपनी-अपनी बात में जहां पर मतभेद है उसको भी व्यक्त करें। उसमें संकोच न करें। लेकिन संसद संस्था के रूप में अगर आगे बढ़नी है तो उसमें संसद के अध्यक्ष पद का जो भार है वह जितनी मात्रा में सर्वसम्मत होगा उतनी मात्रा में ही सदन की गरिमा बढ़ेगी और सदन की संस्था के रूप में शक्ति बढ़ेगी। इस तरह मुझे सत्ता पक्ष से शिकायत है और वह शिकायत यह है कि उनका यह सोचना कि अगर उनके दल का व्यक्ति अध्यक्ष न चुना जाता तो सरकार का चलना सम्भव नहीं था, मैं समझता हूं कि संसदीय परम्परा और संसदीय प्रणाली और संसद की संस्था के नाते जो कल्पना है उसके साथ यह कल्पना मेल नहीं खाती। अन्यथा हाउस आफ कामन्स में यह परम्परा कभी नहीं बनती कि [अनुवाद] "एक बार जो अध्यक्ष पद पर आसीन होता है उसे हमेशा उस पद की गरिमा का निर्वाह करना होता है।" [हिन्दी] उसमें कल्पना यह है कि एक बार कोई व्यक्ति इस गरिमामय पद पर बैठ गया तो उसके बाद वह दल का नहीं रहता और दल से ऊपर उठकर वह कार्य करेगा। मैं इस अवसर पर कहना चाहूंगा कि

अध्यक्ष जी, आपके पूर्व जिन्होंने इस पद को सुशोभित किया उन्होंने अनेक मामलों में इस परम्परा का निर्वाह किया। यहां तक जिस समय उनके सामने दलबदल का बहुत गम्भीर मामला आया था - और जिसमें कई प्रकार के मतभेद थे और मत थे, उन्होंने उस पर जो निर्णय दिया वह एक प्रकार से ऐतिहासिक निर्णय बन गया है और उसके कारण उनकी सब जगह प्रशंसा हुई। अध्यक्ष जी, मेरे दल ने जो निर्णय किया वह निर्णय इस संसद की गरिमा को बढ़ाने का उद्देश्य है और संसद के आपके पद को विशेषकर ताकत देने का उद्देश्य है। इस अवसर पर मैं स्मरण कराना चाहूंगा कि मावलंकर जी के दिनों से लेकर यह चर्चा चलती आई है कि इस पद को और गरिमामय और शक्तिशाली कैसे किया जाए। स्वयं जब अध्यक्ष बने थे श्री मावलंकर जी तब उन्होंने जो कुछ कहा था उसका मैं स्मरण कराना चाहूंगा। उन्होंने कहा कि :

**[अनुवाद]**

"जहां तक राजनैतिक जीवन का संबंध है, राजनैतिक और संसदीय जीवन की वर्तमान परिस्थितियों में ब्रिटेन के अध्यक्ष की तरह हम राजनीति से पूरी तरह अलग नहीं हो सकते हैं। परन्तु भारतीय अध्यक्ष पूर्णतः गैर-दलीय व्यक्ति के समान कार्य करता है इसका तात्पर्य यह है कि दलीय चर्चाओं और विवादों से अपने आपको अलग रखता है।"

**[हिन्दी]**

अर्थात वह चाहे गैर राजनीतिक हो नहीं सकता लेकिन वह गैर दलीय अवश्य होगा।

**[अनुवाद]**

वह गैर-राजनीतिक नहीं हो सकता। ब्रिटेन अध्यक्ष पूरी तरह राजनीति से परे होता है।

**[हिन्दी]**

जिस का उन्होंने इनसुलेट शब्द का प्रयोग किया। हिन्दुस्तान के संदर्भ में वह शायद सम्भव नहीं होगा। वह तब तक सम्भव नहीं होगा जब तक कि कुछ परम्परायें न बनें। एक नई परम्परा को इस सदन ने आरम्भ किया है जिस परम्परा का आपसे सम्बन्ध है, जिस परम्परा का उपाध्यक्ष पद से सम्बन्ध है, लेकिन वह परम्परा और आगे बढ़ायी जाये तो मैं समझता हूं कि बहुत अच्छा होगा। प्रधान मंत्री जी से इस अवसर पर मैं निवेदन करना चाहूंगा कि स्पीकर-शिप और डिप्टी स्पीकर-शिप के बारे में अगर वह आगे बैठ कर विचार कर सकें कि आगे चल कर इसके बारे में नई परम्परायें कैसी हों तो शायद बहुत अच्छा होगा। आपने एक शुरूआत की, उस शुरूआत को आप आगे बढ़ायें यह मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा।

एक बात और इसी विषय में आपसे कहना चाहता हूं। 1968 में एक स्पीकरर्स कान्फ्रेंस हुई थी कान्फ्रेंस ऑफ प्रीजाइडिंग आफिसर्स, मैं उन दिनों दिल्ली महानगर परिषद का अध्यक्ष था। उस नाते उसमें भाग लेने का अवसर मिला था। तब एक उच्च स्तरीय एक समिति बनी थी जिस के अध्यक्ष महाराष्ट्र विधान परिषद के अध्यक्ष श्री पागे जी थे। पागे कमेटी के नाम से वह कमेटी बनी। उसने बहुत सारे सुझाव इस सम्बन्ध में दिये हैं जिस का मैं विस्तार से उल्लेख नहीं करना चाहूंगा शायद वह

करना अच्छा भी नहीं होगा। सदन के सभी दल प्रधान मंत्री जी के निमंत्रण पर एक सर्वदलीय सम्मेलन के रूप में उस पागे कमेटी के सारे सुझावों पर विचार करें जिससे इस विषय में सही परम्परायें बन सकें।

एक बार पुनः अध्यक्ष जी मैं आपको बहुत-बहुत बधाई देता हूं। आप उपाध्यक्ष रहे, उससे पूर्व आप महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष रहे और जिन-जिन पदों पर आप रहे वहां पर आपने जिस शालीनता के साथ, जिस निष्पक्षता के साथ, जिस गरिमा के साथ सारे सदन का संचालन किया, मुझे विश्वास है कि यहां पर भी आपको वही सफलता और साख मिलेगी। बहुत-बहुत बधाई।

**श्री विश्वनाथ प्रताप सिंह** (फतेहपुर) : माननीय अध्यक्ष जी, अभी दलों और दिलों की बात हुई लेकिन अब आप दलों से तो ऊपर हैं लेकिन हम लोगों के दिलों से ऊपर नहीं हैं यानी कि हम लोगों के दिलों में हैं। जो भी अभी तक चर्चा हुई, आपके पद ग्रहण करते ही वह सब समाप्त हो जाती है। हम लोगों ने आपको इस कुर्सी पर उपाध्यक्ष के रूप में देखा है, उसमें आपकी दक्षता देखी, आपकी निष्पक्षता देखी, हम उसके साक्षी हैं। आपकी विनम्रता के पीछे विवेक की जो दृढ़ता है, उसको भी हम लोगों ने पहचाना है।

मान्यवर, सदन नियमावली से केवल बनता है, चलता नहीं है। वह नियमावली से नहीं न्याय से चलता है और उस न्याय की झलक हम लोगों ने देखी है इसलिये आपके इस पद पर आसीन होने पर हम लोगों में एक नया विश्वास अवश्य पैदा हुआ है। जहां तक सहयोग की बात है हम लोग विपक्ष में हैं मौन रहने का तो वायदा नहीं कर सकते, यह भी नहीं कह सकते कि कोलाहल नहीं होगा लेकिन कोलाहल को कला की हद तक नहीं ले जायेंगे। इस कोलाहल में केवल हम लोगों की आवाज ही नहीं है जो कि इस सदन के अन्दर है बल्कि वे करोड़ों लोग जो कि इस सदन में नहीं हैं, वे भी देखते और सुनते हैं कि क्या चर्चायें हो रही हैं। आपका एक-एक निर्णय झोपड़ियों तक, मेहनतकशों तक और गरीबों तक पहुंचता है। इस सदन में हो रही तमाम चर्चाओं में अगर किसी कोने से उनसे जुड़ी हुई एक हल्की बात आये तो उसके लिये आप से यही नम्र निवेदन है कि आप उस आवाज को जरूर सुनिये। वहीं पर हम सब की सार्थकता उसी कसौटी पर आयेगी कि हम सब मिलकर उनके लिये यहां पर क्या करते हैं और उनके भाग्य के बारे में कैसा निर्णय करते हैं।

मान्यवर, पदों पर लोग आते हैं और चले जाते हैं लेकिन हम को विश्वास है कि आप इस पद पर बैठे हैं, जो कुछ हमने देखा है, अपनी परम्परायें जरूर छोड़ जायेंगे। उन परम्पराओं के बारे में यहां भी सदन में चर्चा हुई और जिसके बारे में आडवाणी जी ने भी चर्चा की। हमारा ख्याल है कि हम सब लोगों की एक आकांक्षा है और हम लोगों का पूरा विश्वास है कि आपके मार्गदर्शन में हम लोग नई मान्यतायें रखेंगे, नई परम्परायें रखेंगे।

[अनुवाद]

**श्री सोमनाथ चटर्जी** (बोलपुर) : महोदय, मैं अपनी तथा अपने दल की ओर से आपको अपने गणतंत्र के इस उच्च पद पर चुने जाने के लिये बधाई देता हूं।

हमने आपको इस सदन में मंत्री के रूप में तथा सभापति और उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए देखा है और संसदीय परम्पराओं और उसकी सर्वोच्चता को बनाए रखने में आपकी दृढ़ता, सत्यनिष्ठा और स्पष्टता की सराहना की है ।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस सदन तथा इस सदन के सदस्यों के अधिकारों और विशेषाधिकारों के संरक्षक के रूप में जिस पद पर आज आप आसीन हुए हैं उस पद की उत्कृष्ट परम्पराओं का पालन करेंगे ।

आज आप इस सभा के अध्यक्ष हैं । अब आप किसी भी दल या किसी राजनीतिक दलों के गठ-जोड़ के सदस्य नहीं हैं । आज जैसी सभा का गठन है उससे हमें यह महसूस होता है कि जहां तक आपका संबंध है, आप सभा के सभी वर्गों के साथ समान न्याय करेंगे ताकि देश की करोड़ों जनता की आकांक्षाओं और अपेक्षाओं को सदस्य अभिव्यक्ति दे सकें और विशेषकर उस परिस्थिति में जबकि सामान्य जनता द्वारा अधिक से अधिक कठिनाईयों का सामना किया जा रहा है तो यह अपेक्षा की जाती है कि उसे इस सभा में अच्छी तरह अभिव्यक्ति मिलेगी जिसके लिये हमें पूरा विश्वास है कि आप सदस्यों को समुचित अवसर प्रदान करेंगे ।

हम अपनी ओर से आपको अध्यक्ष के रूप में उत्तरदायित्वों का वहन करने जैसे के दुरूह कार्य में पूरी सहायता देंगे ।

मैं विवाद में नहीं पड़ना चाहता हूं । लेकिन जब हमने अपना उम्मीदवार खड़ा करने का निर्णय लिया था तब जहां तक आपका और अध्यक्ष के रूप में आपकी क्षमता का संबंध है, आपकी उम्मीदवारी की घोषणा से उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है । हमें आप में और आपकी न्यायशीलता में पूरा विश्वास है ।

जैसा कि प्रधान मंत्री ने स्वयं ही कहा है कि हम गंभीर परिणाम वाली समस्याओं का सामना कर रहे हैं और इन समस्याओं को हल करने में सभा को अपने विचार करने पड़ेंगे । यद्यपि मैं नहीं जानता कि इन मुद्दों पर सरकार का रवैया क्या होगा — जहां तक सभा के गठन का संबंध है इन समस्याओं को हल करने और उनकी वर्तमान स्थितियों पर विचार करने का यह अवसर उपयुक्त नहीं है ।

एक बार पुनः हम आपको बधाई देते हैं और मुझे विश्वास है कि आप इस पद को सभी संबद्ध लोगों की संतुष्टि के अनुसार सुशोभित करेंगे ।

**श्री बी० विजय कुमार राजू** (नरसापुर) : महोदय, मैं नव निर्वाचित अध्यक्ष को बधाई देना चाहूंगा । अपने दल की ओर से व अपनी ओर से मैं आपको बधाई दे रहा हूं । महोदय, मैं आपको 1984 से जानता हूं । इस सभा के उपाध्यक्ष के रूप में 1989 से, आपने अपने कर्त्तव्य को भलीभांति निभाया है । मैं आशा करता हूं कि भविष्य में भी आप इस सम्माननीय सदन की गरिमा को बनाए रखेंगे । मैं आपकी सफलता की कामना करता हूं । इस सदन के अध्यक्ष चुने जाने पर मैं आपको पुनः बधाई देता हूं ।

**श्री फ्रैंक एंथनी** (नामनिर्देशित आंग्ल-भारतीय) : अध्यक्ष महोदय, इस सम्माननीय सभा के वरिष्ठतम सदस्य होने के नाते, मैं कहूंगा कि सर्वसम्मति से आपका निर्वाचन होने में जिस भी दल

ने सहयोग दिया है, वह प्रशंसा का पात्र है। मैं प्रधान मंत्री की सराहना करूंगा क्योंकि अभी उनके प्रधान मंत्री बनने के पश्चात् मैं उनके काफी नजदीक सम्पर्क में रहा हूं और मैंने इस दौरान उनमें समझौता व तादात्म्य करने के विशेष गुण पाए हैं और विशेषकर वर्तमान राजनैतिक समय में अध्यक्ष महोदय आप, इस सर्वोपरि सदन की प्रभुसत्ता के निर्णायक हैं। इस तरह से आप कानून से परे हैं। इस देश की सर्वोच्च अदालतों के नोटिस का उत्तर देने की आप की आवश्यकता नहीं है। इसलिए सदन की प्रभुसत्ता के आप प्रतीक हैं। यह एक परम्परा बन गई है कि सत्तारूढ़ दल अध्यक्ष पद के लिए अपना एक व्यक्ति चुनता है क्योंकि आप सत्तारूढ दल के भी निर्णायक हैं।

महोदय, मुझे संविधान सभा का निर्वाचित सदस्य होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है इसमें भारत के सर्वश्रेष्ठ राजनैतिक नेता व विधिवेत्ता व्यक्ति शामिल थे, और अध्यक्ष महोदय हमने एक बात पर जोर दिया कि हमारा संविधान अमरीकी संविधान की तरह नहीं है। अमरीकी संविधान के विपरीत हमारा निश्चित झुकाव एकात्मक प्रणाली की ओर था जबकि अमरीकी संविधान का झुकाव संघीय प्रणाली की ओर था। यहां नाजुक मामलों में केन्द्रीय सरकार का प्रभुत्व रहता है और अंत में वे नाजुक मामले आपकी व्याख्या के अंतर्गत आते हैं। मुझे आपको कार्य करते हुए देखने का सौभाग्य मिला है, मैं ऐसा कुछ नहीं कहूंगा जिसमें कुछ वैयक्तिक निहितार्थ हो। किन्तु जैसा मैंने पहले कहा है, मैं बिना किसी निजी प्रभाव के अपना निजी विचार दूंगा कि स्वर्गीय श्री मावलंकर हमारे महानतम अध्यक्षों में से थे। वे बहुत दृढ़ होने के साथ साथ निष्पक्ष भी थे। मुझे आपको पहले देखने का सौभाग्य मिला है और मैं अत्यंत प्रभावित हुआ हूं। महाराष्ट्र का विशेष अनुभव आपके पास है। मैं आपकी बौद्धिक और राजनैतिक तत्परता से प्रभावित हुआ हूं और मैंने आपमें ऐसे गुण पाए हैं जो आपको एक अत्यन्त महान अध्यक्ष बनाएंगे।

इस सभा के अत्यन्त वरिष्ठ सदस्यों की ओर से मैं आपका स्वागत करता हूं। आप हमेशा अपना अधिपत्य व इस सम्माननीय सभा की प्रभुसत्ता बनाएं रखें।

**श्री इन्द्रजीत गुप्त** (मिदनापुर) : मैं अपनी तथा अपने दल की ओर से आपको अध्यक्ष के इस उच्च पद पर चुने जाने के लिए हार्दिक बधाई देता हूं। हम आपको सभा की कार्यवाही के संचालन जैसे दुष्कर कार्य में अपना पूरा-पूरा सहयोग देंगे।

कुछ घंटे पूर्व तक, इस देश के कुछ प्रभावी समाचार पत्रों को पढ़ने से ऐसा आभास हो रहा था कि माननीय अध्यक्ष के चुनाव में कटु विवाद या टकराव हो सकता है। अब सभी देख सकते हैं कि सहयोग और सर्वसम्मति से जो कि दोनों पक्षों की ओर से होता है एक पक्ष की ओर से ही नहीं होता, इस सभा के सदस्यों ने दसवीं लोक-सभा की कार्यवाही को सौहार्दपूर्ण ढंग से शुरू करने का निर्णय किया। और मैं यह भी कहूंगा कि पर्दे के पीछे जो भी विवाद या मतभेद थे—वे अंतिम दिनों तक थे इसमें कोई शक नहीं है—किन्तु उनका व्यक्ति विशेष से कोई संबंध नहीं था। कुछ राजनैतिक विचार-विमर्श हुआ था, जिस पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए, क्योंकि अभी हम एक अत्यन्त वृहद् चुनाव युद्ध से गुजरे हैं जिसमें कई बार भावनाएं उग्र हो जाती हैं; कई वैचारिक एवं राजनैतिक मतभेद रहे हैं। और यह अभी तक हमारे जीवन का सबसे अधिक लम्बा और दुःखदायी चुनाव रहा है—दुःखदायी इसलिए कि इसी के बीच श्री राजीव गांधी की नृशंस हत्या की गई और इसलिए भी क्योंकि अप्रैल में उम्मीदवारों के नामांकन

पत्र भरने की प्रक्रिया प्रारंभ हुई थी और यह पूरी नहीं हुई। आज तक भी, सारे देश में चुनाव प्रक्रिया पूर्ण नहीं हुई है। मैं समझता हूं इससे पहले कभी भी ऐसा नहीं हुआ। और कई बार, सिर्फ हम ही नहीं बल्कि अन्य देशों के लोग भी विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र होने पर भारत को बधाई देते हैं। इस चुनावी संघर्ष के दौरान कई बार लोगों को यह शंका हुई थी कि सम्पूर्ण चुनाव प्रक्रिया पूरी होने दी जाएगी अथवा नहीं क्योंकि इतनी अधिक हिंसा हुई; कई मौतें हुई और कई बार ऐसे विलम्ब हुए जिन्हें शायद रोका जा सकता था। किन्तु दूरदर्शन पर हमेशा मतदाताओं की लम्बी कतारें देख कर जो कड़ी धूप में, वर्षा में घंटों अनुशासन में खड़े होकर अपना वोट डालने की प्रतीक्षा करते हैं, उन्हें देख कर हम आश्वस्त हुए। जब तक जनता के हृदय में जनतंत्र के प्रति एक गहरी प्रतिबद्धता न हो तब तक वे इस प्रकार की कठिन परीक्षा से गुजरने के लिए तैयार नहीं होंगे। मेरे विचार से, इस सभा को इस देश की आम जनता को बधाई देनी चाहिए और सर्व प्रथम मतदाताओं की प्रशंसा करनी चाहिए जिन्होंने देश की सबसे बड़े जनतंत्र की प्रतिष्ठा को कायम रहने दिया है। अन्यथा यह व्यवस्था टूटने का खतरा था।

महोदय, निःसन्देह आपके समक्ष एक अत्यन्त दुष्कर कार्य है। जनता ने अपने विवेकानुसार पुनः एक त्रिशंकु संसद को चुना है। जनता ने या इस संसद ने एक और अल्पसंख्यक सरकार बनाई है। मेरे विचार से इससे आपका कार्य और कठिन हो गया है क्योंकि इस सभा में कोई भी नहीं चाहता कि दो तीन महीनों में ही इस देश को पुनः चुनाव में झोंक दिया जाए। कोई यह नहीं चाहता। सभा की कार्यवाही को इस प्रकार संचालित किया जाए कि देश की ज्वलंत समस्याओं की ओर, जिनका अभी तक कोई निदान नहीं हुआ है, और काफी समय से उन पर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया है इस देश के अस्तित्व के लिए उन पर ध्यान देना जरूरी है। मैं सिर्फ आर्थिक समस्याओं का ही उल्लेख नहीं कर रहा हूं; वे अत्यंत गंभीर हैं। किन्तु कुछ अन्य समस्याएं भी हैं, सामाजिक समस्याएं, राजनैतिक समस्याएं, इस देश के विभाजन की समस्याएं, अलगाववादी तत्व सक्रिय हैं। अभी तक हम कोई समाधान नहीं पा सके। जनता बेरोजगारी, मुद्रा स्फीती और महंगाई की चपेट में है। हम कोई समाधान नहीं पा सके। अतः इस सभा को मिल कर इस प्रकार कार्य करना होगा, जिससे ये समस्याएं सुलझ जाएं। आपको यहां हमारी चर्चाओं और वाद-विवादों की अध्यक्षता करते हुए निष्पक्ष रहना होगा और हम जानते हैं कि आप निष्पक्ष हैं, आप पर्याप्त अनुभवी हैं, आप इस सभा की प्रक्रिया के नियमों में पारंगत हैं और दृढ़ता से निर्णय करेंगे। किन्तु मुझे विश्वास है कि आप न्याय करने में दया बरतेंगे और प्रत्येक संसद सदस्य को अपनी बात कहने का उचित अवसर देंगे।

किसी दल को यह नहीं सोचना चाहिए कि वे तब तक देश का शासन नहीं चला सकते जब तक कि अध्यक्ष उनके दल का कोई सदस्य न हो। मैं इस प्रकार के वक्तव्य को पसंद नहीं करता क्योंकि अध्यक्ष देश का शासन चलाने के लिए नहीं होता। देश का शासन चलाना अध्यक्ष का काम नहीं है। इसलिए अध्यक्ष के गरिमामयी पद को इस स्तर पर नहीं लाना चाहिए कि वह अमुक दल से सम्बन्धित है या किसी अन्य दल से।

यह सत्य है कि इस प्रश्न पर पहले मतभेद थे, कुछ टकराव था, किन्तु अंत में हमने निर्णय किया कि आपके चुनाव के मामले में हममें ऐसा कोई मतभेद नहीं रहना चाहिए जो हमें एक दूसरे के प्रति कटु बना दे। हम राजनैतिक प्रतिद्वन्दी हो सकते हैं किन्तु राजनैतिक और व्यक्तिगत रूप से हम

एक दूसरे का सम्मान करते हैं और हम एक उचित स्वस्थ चर्चा और बहस चाहते हैं जो उग्र हो सकती है किन्तु उसका मुख्य उद्देश्य देश की समस्याएं सुलझाना है। अगर हम असफल हो गए तो जनता हमें दूसरा अवसर नहीं देगी।

मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता। मैं आपके कल्याण की कामना करता हूं। आप मेरे तथा हममें से कईयों के पुराने मित्र हैं। मुझे आप में पूरा विश्वास है। मैं आपकी निष्पक्षता तथा कार्यकुशलता से अवगत हूं। अध्यक्ष के रूप में आप सभा में बेहतर कार्य करेंगे। अपने दल की ओर से, मैं पुनः आपकी सफलता की कामना करता हूं और इसमें आपको पूरा सहयोग देने का विश्वास दिलाता हूं।

**श्री पी०जी० नारायणन** (गोबिचेट्टिपालयम) : अध्यक्ष महोदय, इस माननीय सभा का, जो इस देश का उच्चतम प्रजातान्त्रिक मंच है, के अध्यक्ष पद पर चुने जाने पर मैं अन्ना-द्रविड़मुन्नेत्रकषगम की ओर से आपको बधाई देता हूं। एक मन्त्री और पिछली लोक सभा के उपाध्यक्ष के रूप में लम्बे सार्वजनिक जीवन का आपका अनुभव इस सभा की परम्पराओं और नियमों के अनुसार इसकी कार्यवाही दक्षता और सुगमता से चलाने में अवश्य ही सहायक सिद्ध होगा।

अब आप पूरी सभा के हैं और आप प्रजातन्त्र के अभिभावक तथा इस सभा और इसके सदस्यों के अधिकारों और विशेषाधिकारों के संरक्षक हैं। मैं आशा करता हूं कि आपके संरक्षण में सदस्यों के अधिकार और विशेषाधिकार सुरक्षित रहेंगे।

महोदय, हम आपमें सम्पूर्ण विश्वास और आस्था रखते हैं। इस सभा की गरिमा और मर्यादा को बनाए रखने के लिए अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करने में मैं अन्नाद्रविड़मुन्नेत्रकषगम की ओर से आपको अपना समर्थन और सहयोग देने का वचन देता हूं। मैं आशा करता हूं और मुझे विश्वास है कि आपके कार्यकाल के दौरान प्रजातान्त्रिक मूल्य और परम्पराएं कायम रहेंगी। इन शब्दों के साथ, मैं आपको पुनः बधाई देता हूं।

**श्री नानी भट्टाचार्य** (बरहामपुर) : अध्यक्ष महोदय, सर्वप्रथम मैं आपको हृदय से बधाई देता हूं। मैंने जो स्थिति कुछ दिनों पहले देखी है उससे मेरे हृदय में इस सभा के कुछ वर्गों के विचारों के औचित्य को लेकर कुछ शंका उत्पन्न हो गई है। अब मुझे महसूस होता है कि कांग्रेस की विकृत धर्मनिरपेक्षता इस सभा के कट्टरपन्थी वर्गों के साथ मिल गई है। (**व्यवधान**)

महोदय, यह शायद शुरुआत है। इससे आपका कार्य बहुत बड़ा तथा बहुत कठिन हो गया है। फिर भी, मैं आपको व्यक्तिगत रूप से जानता हूं और मुझे आपकी योग्यता और क्षमता के बारे में भी पता चला है। आपको एक ओर इस बात का ध्यान रखना है कि एक अल्पमत सरकार है। जिसके पास सभा पर कोई अधिकार — अर्थात सम्पूर्ण अधिकार, नहीं है, और दूसरी ओर, इस सभा की सरंचना है। इस सभा की सरंचना काफी आप्राकृतिक है और यह संरचना बहुत ही परेशान करने वाली है। (**व्यवधान**)

**एक माननीय सदस्य** : आप बैसाखियों में से एक हैं। (**व्यवधान**)

**श्री नानी भट्टाचार्य** : मैं आपका और सभा के इस पक्ष का पर्दाफाश करने के लिए बैसाखियों में से एक हूं।

इस गम्भीर अवसर पर, मुझे उन सब विषयों पर बात करनी है क्योंकि यह सभा है और यह एक प्रभुसत्ता सम्पन्न सभा है। हम, जो यहां पर एकत्र हुए हैं, भारत के लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। भारत के लोगों की इस असम्मानजनक और असिद्धान्तवादी, व्यवस्था के बारे में मालूम होना चाहिए और यही मैंने कहा है। मैं इस विषय पर अब और बहस नहीं करना चाहता।

अध्यक्ष महोदय, मुझे आपमें पूर्ण विश्वास है कि आप अध्यक्ष के रूप में अपने कर्त्तव्यों और जिम्मेदारियों को बिना किसी भय या किसी का पक्ष लिए पूर्ण निष्पक्षता और दक्षता से पूरा करने में सफल होंगे।

**[हिन्दी]**

**श्री मोरेश्वर साबे** (औरंगाबाद) : माननीय अध्यक्ष जी, आज के इस ऐतिहासिक दिन पर मैं अपने और अपनी पार्टी की ओर से लोक सभा का अध्यक्ष चुने जाने पर अपने घनिष्ठ मित्र श्री शिवराज पाटिल को हार्दिक बधाई देता हूं।

श्री पाटिल मेरे राज्य महाराष्ट्र के साथ मराठवाड़ा की उस पवित्र भूमि से आए हैं, जिसने पूरे देश में ज्ञान का एक विशाल प्रकाशपुंज बिखेरा है। मराठवाड़ा का होने के नाते मुझे इस बात का गर्व है कि संत ज्ञानेश्वर, समर्थ एकनाथ जैसे संतों की परम्परा यहीं से चली थी। देश के संविधान की इस महत्वपूर्ण सभा के अध्यक्ष के रूप में मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे मित्र श्री शिवराज पाटिल जी श्रीराम तथा छत्रपति शिवाजी की ज्ञानपरम्परा को ध्यान में रख कर निष्पक्ष कार्य करेंगे। मुझे आशा है कि इनके द्वारा सदन में एक आदर्श व्यवस्था की स्थापना होगी। श्री पाटिल के व्यक्तित्व में मृदुभाषी होने के साथ स्पष्ट निर्णय लेने की जो क्षमता है, उससे यह विश्वास किया जा सकता है कि सदन में किसी भी सदस्य या पार्टी के साथ पक्षपात नहीं होगा। छोटे दलों को भी अपने विचार रखने का पूरा समय मिलेगा। क्योंकि मेरा मानना है कि छोटे दल संख्या में भले ही कम हों लेकिन क्षेत्र में उनकी विचारधारा और कार्यशैली का व्यापक असर होता है।

श्री शिवराज वी० पाटिल जी के बारे में यह बात कही जा सकती है कि महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष के रूप में, लोक सभा के उपाध्यक्ष के रूप में उन्होंने जिस निर्भीक और निष्पक्ष परम्परा का निर्वाह किया था और मानदण्ड स्थापित किया था, लोक सभा के अध्यक्ष के रूप में एक ऐसे प्रतिमान की स्थापना करेंगे जिससे आने वाला संसदीय इतिहास याद रखेगा। मैं उन्हें उनके अगले कार्य में सुयश की प्रार्थना करता हूं।

**[अनुवाद]**

**श्री चित्त बसु** (बारसाट) : महोदय, मैं इसे बहुत बड़ी और अनोखी खुशी मानता हूं कि मैं प्रधान मंत्री और इस माननीय सभा के विशिष्ट सदस्यों के साथ मिलकर अपने दल और अपनी ओर से आपके इस महान सभा के अध्यक्ष चुने जाने पर आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

जैसाकि आप जानते हैं, यह सभा लोगों की प्रभुसत्ता का प्रतिनिधित्व करती है। आपको इस सभा के अध्यक्ष के रूप में लोगों की प्रभुसत्ता के संरक्षक के रूप में रहना होगा। और मैं उम्मीद करता हूं कि आप उन जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक हैं जो आप को सौंपी गई हैं।

यह एक बार फिर सिद्ध हो गया है कि भारत एक बहुत जागरूक और महान प्रजातन्त्र है। यह भी सिद्ध हो चुका है कि भारत एक लचीला प्रजातन्त्र है। यह उन कठिनाईयों से सिद्ध होता है जिनसे लोगों को इस दसवीं लोक सभा के चुनाव से पहले गुजरना पड़ा है। यह सभा इस प्रकार संसदीय प्रजातन्त्र की प्रतीक है। और इस सभा की गरिमा और मर्यादा को और हमारे महान देश के बदलते हुए परिवेश में संसदीय प्रजातन्त्र की अन्तिम विजय को बनाये रखने का उत्तरदायित्व आप पर है।

आप इस सभा के सदस्यों के अधिकारों और विशेषाधिकारों के संरक्षक हैं। आप इस सभा की परिपाटियों और समृद्ध परम्पराओं के संरक्षक हैं। यह एक त्रिशंकु संसद है। इस सभा की सामान्य संरचना और स्वरूप ने हम पर, विशेषकर उन पर जो प्रजातन्त्र और धर्मनिरपेक्षता के प्रति वचनबद्ध हैं, बहुत बड़ी जिम्मेवारी डाल दी है। हम पर जो विपक्ष में हैं, जो वामपन्थी हैं, बहुत भारी उत्तरदायित्व है। ऐसी स्थिति में, आपकी भूमिका भी बहुत महत्वपूर्ण है। यह संसद, अपनी चर्चाओं, अपनी बहस और विभिन्न तर्कों के माध्यम से देश को आगे बढ़ा सकती है, अर्थव्यवस्था को एक दिशा दे सकती है और उस बहुआयामी संकट का समाधान ढूंढ सकती है जो आज देश के सामने है, आपके योग्य और सक्षम नेतृत्व से यह सब पूर्ण रूप से किया जा सकता है। और मैं उम्मीद करता हूं कि आप देश की ऐसी कठिन स्थिति में सभा को निराश नहीं करेंगे।

महोदय, मैं अपने दल की ओर से, सभा में लोगों के प्रतिनिधि के रूप में अपने उत्तरदायित्व, देश की धर्मनिरपेक्ष शक्तियों और वामपंथी शक्तियों के सिद्धांतों और वचनबद्धता के प्रति अपनी जिम्मेदारी के प्रति जागरूक रहते हुए, आपसे निवेदन करूंगा कि आप भी हमें हमारे उत्तरदायित्व को निभाने में सहयोग देंगे। मैं इस सभा के सफल संचालन के लिये और इस सभा के उत्तरदायित्वों को पूरा करने में अपने दल की ओर से पूर्ण सहयोग देता हूं।

**श्री इब्राहिम सुलेमान सेठ** (पोन्नानी) : अध्यक्ष महोदय, मैं अपने दल और अपनी ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

'मेरे दल' से अर्थ है भारतीय संघ मुस्लिम लीग। मेरा दल भी इस माननीय सदन के अध्यक्ष पद पर चुने जाने पर आपको बधाई देता है। हमारा देश वास्तव में महानतम प्रजातान्त्रिक देश है और आपको इस देश के संसद की माननीय सभा के उच्चतम पद को सुशोभित करने का अवसर दिया गया है। मैं भली-भान्ति जानता हू कि आप पहले महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष पद पर रहे। और नवीं लोक सभा के उपाध्यक्ष पद पर रहे। अपने इस लम्बे अनुभव के कारण आप इस सभा के, जैसा कि हम सब कहते रहे हैं कि यह एक त्रिशंकु संसद होगी, अध्यक्ष के रूप में भी बहुत सफल सिद्ध होंगे।

महोदय, जैसा कि प्रधान मंत्री ने कहा है, मैं अवश्य कहूंगा कि हम बहुत बड़ी विपत्ति का सामना कर रहे हैं। बहुत सी कठिन समस्यायें हैं जिनके समाधान की आवश्यकता है। और इस सन्दर्भ में, यह कहा गया है कि सब को एक हो जाना चाहिये।

[हिन्दी]

दिलों का मिलन होना चाहिय यह बात इन्होंने कही है, लेकिन दिलों के मिलन के लिए फिजां पैदा करनी चाहिये, दिलों के मिलन के लिये खुलूस चाहिये, दिलों के मिलन के लिये रवादारी चाहिये, दिलों के मिलन के लिये मोहब्बत चाहिये, अगर ये बातें पैदा हो जाती हैं तो दिलों का मिलन हो जायेगा और प्राब्लम हल की जा सकती है।

किसी शायर ने कहा है :

"खुलूसे दिल न हो तो दोस्ती से कुछ नहीं होता,
खुलूसे दिल न हो तो दोस्ती से कुछ नहीं होता,
मुझे मालूम है मेरी खुशी से कुछ नहीं होता।"

अगर हम कह दें दिलों का मिलन होना चाहिये, खुश हो जायें तो इससे कुछ नहीं होता, दिलों के मिलन के लिए खुलूस होना चाहिये, दिलों के मिलन के लिये रवादारी होनी चाहिये।

دلوں کا ملن ہونا چاہئے یہ بات انہوں نے کہی ہے لیکن دلوں کے ملن کے لئے فضا پیدا کرنی چاہئے دلوں کے ملن کیلئے خلوص چاہئے - دلوں کے ملن کیلئے رواداری چاہئے دلوں کے ملن کے لئے محبت چاہئے - اگر یہ باتیں پیدا ہو جاتی ہیں تو دلوں کا ملن ہو جائے گا اور پرابلم حل کی جا سکتی ہیں - کسی شاعر نے کہا ہے - "خلوص دل نہ ہو تو دوستی سے کچھ نہیں ہوتا
مجھے معلوم ہے میری خوشی سے کچھ نہیں ہوتا -"

اگر ہم کہہ دیں دلوں کا ملن ہونا چاہئے خوش ہو جائیں تو اس سے کچھ نہیں ہوتا دلوں کے ملن کے لئے خلوص ہونا چاہئے - دلوں کے ملن کے لئے رواداری ہونی چاہئے -

[अनुवाद]

हम सब को ऐसी स्थिति और वातावरण पैदा करना चाहिये जिससे सभी एक हो जायें। यह बहुत ही दुःख की बात है कि राजनैतिक क्षेत्र में हिंसा की प्रवृत्ति भड़क रही है। हर जगह हिंसा की प्रवृत्ति है और इसी हिंसा की प्रवृत्ति से भारत के महान सपूत, श्री राजीव गांधी की नृशंस हत्या हुई। हिंसा की इस प्रवृत्ति को कुचला जाना चाहिये और सभी दलों को एकजुट होकर एक समन्वय और सहयोग की भावना रखनी चाहिये और इसी प्रकार हम देश की समस्याओं को सुलझा पाने में सफल होंगें।

महोदय, अब मैं आपको आपकी इस उच्चतम पद पर नियुक्ति पर बधाई देता हूं और यह उम्मीद करता हूं कि आप पूर्ण रूप से निष्पक्ष होंगें। मैं आशा करता हूं कि आप इस सभा के सम्मान को बनाये रखेंगे और मुख्य रूप से छोटे समूहों हमारे दल की ओर विशेष ध्यान देंगे। हमारे विरुद्ध किसी प्रकार का पक्षपात नहीं होना चाहिये। मैं इसी की आशा करता हूं और आपसे ऐसा आश्वासन चाहता हूं।

महोदय, मैं आपकी सफलता की कामना करता हूं। यह एक त्रिशंकु संसद है जिससे, मैं उम्मीद करता हूं, कि आप सभा की कार्यवाही पूरी ईमानदारी और निष्पक्षता के साथ चला सकेंगे। मैं आपकी

पूरी सफलता की, लम्बी उमर की, और इस त्रिशंकु संसद में पूरे कार्यकाल की अर्थात् पांच वर्ष तक बने रहने की कामना करता हूं। महोदय, इस सभा के कार्य-संचालन के बारे में मुझे यह कहना है :

[हिन्दी]

हयात लेकर चलो, कायनात लेकर चलो,
चलो तो सारे जमाने को साथ लेकर चलो।

" حیات لے کے چلو کائنات لے کے چلو
چلو تو سارے زمانے کو ساتھ لے کے چلو "

[अनुवाद]

मैं आशा करता हूं कि इस सभा की कार्यवाही के सम्बन्ध में भविष्य में आप यही रवैया अपनायेंगे।

(व्यवधान)

**श्रीमती दिल कुमारी भंडारी** (सिक्किम) : श्रीमान्, मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से एवं सिक्किम के लोगों की ओर से आपका अभिनन्दन करती हूं। मैंने सिक्किम के लोगों की ओर से इसलिये कहा, क्योंकि सिक्किम से मैं एकमात्र ही सदस्या हूं। मैं इस सम्माननीय सदन में आपके सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित होने पर आपको बधाई देती हूं। निःसंदेह आप इस पद के पात्र व्यक्ति हैं और आप भविष्य में अपनी जिम्मेदारियों का निर्वाह करने के लिये पूरी तरह से सक्षम हैं। हालांकि अपने राज्य और अपनी पार्टी की मैं यहां पर एकमात्र सदस्या हूं, मैं सभा के कार्य को सफलतापूर्वक चलाने के लिये आपको अपना पूर्ण सहयोग दूंगी और आपके सफल कार्यकाल के लिए कामना करती हूं। एक बार पुनः मैं अपनी ओर से और अपने राज्य की ओर से आपको बधाई देती हूं।

[4.00 म०प०]

[हिन्दी]

**श्री शिबू सोरेन** (दुमका) : अध्यक्ष महोदय, आज इस महान् देश में इस कुर्सी पर आपको सर्वसम्मति से अध्यक्ष के रूप में सम्मानित किया है, उसके लिये धन्यवाद देता हूं।

मैं अपनी पार्टी झारखण्ड मुक्ति मोर्चा और मेरी तरफ से पूरी उम्मीद रखता हूं कि जितनी भी बड़ी पार्टियां हैं, उनकी तरह ही हम सबों को भी निष्पक्ष रूप से अवसर देने की कृपा करेंगे। चूंकि आप पिछले सदन में भी उपाध्यक्ष के रूप में बहुत ही अच्छे तरीके से अपने कार्य का निर्वहन कर चुके हैं, इसलिए मैं पुनः आपको धन्यवाद देता हूं कि आप हम सब को न्याय देंगे।

[अनुवाद]

**डा० झथन्त रंगपी** (स्वशासी जिला) : अध्यक्ष महोदय, मैं, अपने दल, स्वशासी राज्य मांग समिति और असम के पहाड़ी क्षेत्र के लोगों की ओर से, विश्व के महानतम लोकतन्त्र के अध्यक्ष के गौरवपूर्ण पद के लिये निर्वाचित होने पर आपको बधाई देता हूं।

इस अवसर पर मैं एक मुद्दे पर बोलना चाहूंगा। अध्यक्ष महोदय, जैसा कि आप जानते हैं कि मैं देश के उस क्षेत्र से निर्वाचित होकर आया हूं, जहां अनेक कारणों से लोगों के एक बड़े वर्ग की आस्था देश की स्थापित राजनीतिक और लोकतांत्रिक प्रक्रिया से धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं। लेकिन इसका एक कारण यह भी है कि देश की यह सर्वोच्च विधायी संस्था, पूर्वोत्तर भारत के लोगों, विशेषकर जनजातीय लोगों द्वारा अनुभव की जा रही समस्याओं पर गम्भीरता से विचार नहीं करती और पर्याप्त समय नहीं दती। मैं महसूस करता हूं कि लोगों के धैर्य की और परीक्षा नहीं ली जानी चाहिये। मैं आशा करता हूं कि पूर्वोत्तर भारत के जनजातीय लोगों की समस्याओं पर यहां गम्भीरतापूर्वक विचार किया जायेगा। पूर्वोत्तर क्षेत्र से कम सदस्य हो सकते हैं अध्यक्ष महोदय, मैं आशा करता हूं कि आप हमें समर्थन देंगे ताकि हमारी समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की जा सके और हम अपनी समस्याओं का लोकतान्त्रिक हल निकाल सकें।

इन शब्दों के साथ, मैं आपको पुन: बधाई देता हूं और आपको इस सभा की गरिमा बनाये रखने में पूर्ण सहयोग देने का वचन देता हूं।

**श्री मुहीराम सेकिया** (नोगोंग) : श्रीमन्, मैं अपनी ओर से, अपनी पार्टी की ओर से, असम के लोगों की ओर से, इस सम्मानित सभा के अध्यक्ष के रूप में आपके निर्वाचन पर हार्दिक बधाई देता हूं। श्रीमान्, मैं आशा करता हूं कि आप निष्पक्ष तरीके से सभा का कार्य संचालन करेंगे और इस देश के व्यापक हित में इस सभा में संबन्धों को मजबूत बनाने वाली शक्ति के रूप में कार्य करेंगे।

इन शब्दों के साथ, मैं पुन: आपको बधाई देता हूं।

**श्री के०पी० उन्नीकृष्णन** (वडागरा) : श्रीमान, इतिहास की सबसे महान संसदीय संस्था अर्थात् इस सभा के सर्वसम्मति से अध्यक्ष निर्वाचित होने पर मैं, प्रधान मंत्री, विपक्ष के नेता और अपने सहयोगियों के साथ आपको बधाई देने में, स्वयं को बड़ा सौभाग्यशाली मानता हूं।

श्रीमान्, आपने महाराष्ट्र विधान सभा और इस सदन में मंत्री और पीठासीन अधिकारी के रूप में, बड़ी योग्यता के साथ अपने कार्य को निभाया है। हमें आपके बारे में जानकारी है। हमारी जानकारी से हमें निराशा नहीं होती। लेकिन इसके विरुद्ध, आपके प्रति हमारे आदर, प्यार में वृद्धि ही हुई है।

श्रीमान्, आपका यह चुनाव भले ही किन्हीं परिस्थितियों में हुआ हो, परन्तु अधिकतर सदस्यों के मन में आपके प्रति अत्याधिक आदर है। यही एक पीठासीन अधिकारी के रूप में आपकी सफलता की गारंटी है। हो सकता है कि सभा शोरगुल वाली हो।

श्रीमान्, इस समय हम इतिहास के चौराहे पर खड़े हैं। आपके सामने बहुत बड़ी ऐतिहासिक जिम्मेदारी है। हम इतिहास की नयी बड़ी चुनौतियों का सामना करने जा रहे हैं। संविधान सभा के कुछ जीवित सदस्यों में से एक श्री फ्रैंक एन्थनी, आज सभा में उपस्थित हैं। उन्होंने भारतीय संविधान की विशेषताओं का उल्लेख किया है। मैं इस बात पर जोर देना चाहता हूं कि हमने भारतीय संविधान के चरित्र के साथ-साथ इसकी प्रस्तावना को, जोकि बाद में जोड़ी गयी, को यथास्थिति ही बनाया है।

इस सदन का मूल कार्य सामाजिक लक्ष्यों को पाना और देश की एकता तथा धर्मनिरपेक्षता को बनाये रखना है । जैसा कुछ लोग सोचते हैं धर्मनिरपेक्षता कोई बनावटी कल्पना नहीं है । कुछ लोग धर्मनिरपेक्षता के स्वरूप को बिगाड़ना चाहते हैं । आज कुछ लोग इसको निम्न स्तर पर लाकर, गणतन्त्र का ही अवमूल्यन करना चाहते हैं । इस प्रकार की प्रवृत्तियों से लड़ना होगा और इस सभा में ही इसकी लड़ाई लड़नी होगी । मुझे पूरा विश्वास है कि धर्मनिरपेक्षता की और संविधान के मूल भावनाओं की जीत होगी ।

श्रीमान्, आपका एक कार्य सदस्यों के अधिकारों की रक्षा करना है, मुझे पूरी आशा है कि आप ऐसा ही करेंगे । विशेषकर अल्पसंख्यक और विरोध करने वालों का क्योंकि विमति ही मूल्यवान् और महत्वपूर्ण भूमिका है और स्वतन्त्रता का यही मूल मंत्र है । आपका कार्य यह भी है कि इस देश के धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करें । हमारा देश एक भाषा, रंग, जाति या धर्म के आधार पर नहीं बना है । जब अल्पसंख्यकों द्वारा यहां विचार प्रकट किए जायें, तब इस सभा को इन सबकी आशाओं का प्रतिबिम्ब होना चाहिए जोकि इस महान देश, भारत का निर्माण करना चाहते हैं ।

श्रीमान्, मैं आपकी इस कार्य में सफलता की कामना करता हूं । मुझे आशा है कि आप अपने अभूतपूर्व ज्ञान और पृष्ठभूमि के आधार पर ऐसा करने में सफल होंगे और इस प्रकार भारतीय संसद के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ेंगे ।

**श्री याइमा सिंह युमनाम** (आंतरिक मणिपुर) : श्रीमान्, अपनी ओर से और मणिपुर पीपुल्स पार्टी की ओर से मैं आपको बधाई देता हूं । मेरा राज्य देश के पूर्वी कोने में है । श्रीमान्, हालांकि आप सभा के अध्यक्ष आज चुने गये हैं, पर हम आपको उस समय से जानते हैं जब आप महाराष्ट्र विधान सभा के अध्यक्ष थे ।

मेरी एक शिकायत है कि मैं अपने विचार अपनी भाषा में व्यक्त नहीं कर पा रहा हूं जबकि सभा में अन्य सदस्यों को यह सुविधा प्राप्त है । यदि मुझे अपनी भाषा में बोलने का अवसर मिले तो मैं अपने विचार अधिक अच्छी तरह प्रकट कर सकूंगा । अब आप इस पद पर आसीन है, मैं आशा करता हूं कि आप हमारी समस्या का समाधान करेंगे । इस सम्मानित सभा के अध्यक्ष निर्वाचित होने पर, मैं आपको पुनः बधाई देता हूं ।

**[हिन्दी]**

**श्री चन्द्रशेखर** (बलिया) : अध्यक्ष जी, आपके चुनाव के लिये आपको हार्दिक बधाई । आपके चुनाव से संसद ने अपनी परम्परा के गरिमामय इतिहास में एक उज्ज्वल अध्याय जोड़ा है । इसने यह भी सिद्ध किया है कि आप निर्विरोध और निर्भय रहें ।

प्रधान मंत्री जी ने कहा है कि संकट का समय हैं । समस्यायें जटिल हैं । समाधान के लिये हमें अध्यक्ष महोदय ज्ञानेश्वरी का ज्ञान चाहिये, भवानी की शक्ति चाहिये, लेकिन ज्ञान और शक्ति का उपयोग भी तभी होगा जब देश के करोड़ों लोगों की इच्छा-शक्ति को हम जागृत कर सकें । उस इच्छा शक्ति को जागृत करने का बड़ा काम, बड़ा उत्तरदायित्व इस संसद के ऊपर है और इस संसद को आगे बढ़ाने का, उसे ठीक रूप से चलाने का उत्तरदायित्व आपके ऊपर है । इसलिये इस इतिहास की एक बड़ी जिम्मेदारी आपके ऊपर आई है ।

आपको हम सब जानते हैं । आप में शील है, संयम है, विवेक है । आपमें सबको साथ ले चलने की क्षमता है । आप में विनीत भाव है, लेकिन साथ ही आप में दृढ़-संकल्प भी है । इसलिए मुझे विश्वास है कि आप इस उत्तरदायित्व का निर्वाह कर सकेंगे । आप अपनी ऐतिहासिक जिम्मेदारी को नये अध्यक्ष के नाते पूरी कर सकेंगे, बल्कि इस संसद को एक नया नेतृत्व देंगे ताकि यह संसद अपनी जिम्मेदारी को पूरी कर सके । यहां संघर्ष के लिये बहुत अवसर हैं, लेकिन आज संघर्ष नहीं चाहिये । आज मिलकर के, समस्याओं के समाधान के लिये एक नयी राह ढूंढने का प्रयास चाहिये ।

मुझे विश्वास है कि आपके शील से, आपके सौजन्य से और आपके विवेक से हमें शक्ति मिलेगी, प्रेरणा मिलेगी और आपको भविष्य में अपने उत्तरदायित्व की जिम्मेदारी निभाने की शक्ति मिलेगी ।

मेरी शुभकामनायें हैं ।

[अनुवाद]

**अध्यक्ष महोदय** : माननीय सदस्यों, मैं इस माननीय सभा के प्रथम सेवक और अध्यक्ष के रूप में अपना पहला कर्त्तव्य निभाते हुए दसवीं लोक सभा के पहले सत्र के दूसरे दिन इस सभा के माननीय सदस्यों का हार्दिक स्वागत करता हूं ।

यह सभा और इसका परिवेश हमारे इतिहास के अंग हैं जो अति महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय हैं ।

वह वैसे ही कायम रहने चाहिये बल्कि पहले से अधिक प्रभावी, महत्वपूर्ण और अविस्मरणीय ढंग से चलने चाहिये । न केवल विश्व के सभी ऐसे संस्थानों के समान बल्कि कुछ हद तक उनसे भी अधिक प्रभावी ढंग से चलने चाहियें ।

इस सभा के लिए देश के महान राजनीतिज्ञ और व्यक्ति चुने गये हैं । उन्होंने समर्पण, दूरदर्शिता, ईमानदारी, जनता, देश और विश्व के प्रति प्रेम और महान उद्देश्यों, दर्शन और विचारों से यहां काम किया है । उन्होंने संसदीय लोकतन्त्र के कार्यकरण के इतिहास में महान परम्परायें स्थापित कीं और गहरी छाप छोड़ी है ।

हमारे लिये आभार सहित उन्हें तथा उनके योगदान को याद करना तथा उनके द्वारा बताई गई रूपरेखा तथा निदेशों का पालन करना बेहतर होगा । साथ ही साथ नई तथा आकस्मिक परिस्थितियों से निपटने के लिये नई प्रणालियां और निदेश बनाने तथा उनका पालन करने के लिये अपनी प्रतिभा का उपयोग करना आवश्यक होगा । संसदीय दक्षता इन दोनों को विवेक सम्मत ढंग से मिला कर काम करने में ही है । सभा के वर्तमान सदस्यों को यह दिखा देना चाहिये कि उनमें अवसर के अनुरूप कार्य करने की क्षमता है । जनता और राष्ट्र को होने वाली कठिनाईयों पर चर्चा की गई तथा उनका समाधान किया गया । इसी प्रकार किसी प्रकार की बाधा के बिना सार्वजिनक हित के मामलों का विश्लेषण किया गया और चर्चा के माध्यम से उन्हें समझा गया । काफी हद तक इन प्रयासों के परिणाम देश की जनता के लिये लाभदायक और संतोषजनक रहे । उनमें जनता और दलों के भिन्न भिन्न विचार तथा उनके और अधिक संतोषजनक समाधान के लिये उनकी मांग झलकती है । उन्होंने

देश में लोकतन्त्र के लिये मजबूत और सुदृढ़ तन्त्र दिया तथा विश्व में विश्वसनीयता और अच्छा नाम अर्जित किया ।

दसवीं लोक सभा के सदस्यों को देश और विश्व की नई स्थितियों, जीवन के नये दृष्टिकोण, नई विचारधारा और दर्शन का सामना करते हुए नई नीतियों, योजनाओं और कार्यक्रमों के निर्माण का आनन्द और रोष का सामना करना होगा। हमें चुनौतीपूर्ण, पेचीदे और दुःसह कार्य करने हैं साथ ही सार्वजनिक हित और कल्याण, देश और विश्व की बेहतरी, समय की आकस्मिकता तथा नई स्थितियों और समस्याओं से निपटने के लिये अपनी परम्पराओं और दृढ़ विश्वास तथा समझौते और विवेक की आवश्यकता को महसूस करते हुए अवसर का लाभ उठाकर यह साबित करना होगा कि इस सभा में बैठे हम सभी एक दूसरे के मित्र हैं । जिनके अलग-अलग विचार हैं तथा हम एक दूसरे के शत्रु नहीं है । माननीय सदस्यों, पीठासीन अधिकारियों तथा अन्य अधिकारियों के बीच मित्रता रहनी चाहिए जिससे एक दूसरे को समझने तथा सहायता करने में मदद मिलेगी । सभा के अधिकारी ऐसा कर रहे हैं । वे इस कार्य के लिये प्रशिक्षित हैं । जीवन के प्रति उनके दृष्टिकोण का यह अंग बन चुका है । सभी माननीय सदस्य देश की बेहतरी तथा लोकतन्त्र को मजबूत करने के इच्छुक हैं । इसलिये, मैं यह सोचता हूं और प्रार्थना करता हूं कि हम सभी एक दूसरे को समझें और जितना हो सके सहयोग करें । पीठासीन अधिकारियों का यह कर्त्तव्य है कि सभा में प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिये वे सदस्यों को, उनकी इच्छाओं को समझें, उनकी सहायता और सहयोग करें, सभी सदस्यों के प्रति निष्पक्ष रहें, सभी को न्याय और स्नेह दें । हम आशा और प्रार्थना करते हैं कि हम इसी प्रकार कार्य करते रहें ।

सभा जनता की इच्छा और लोकतन्त्र को प्रतिबिंबित करती है । यहां जो भी कार्यवाही होती है वह जनता और देश के सभी भागों तक पहुंचनी चाहिये । इसकी जिम्मेदारी मीडिया पर है और उसे अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है । वे यह कार्य करने में निपुण होंगे । देश के सभी भागों की जनता को परंपरागत, नये और आधुनिकतम तरीकों द्वारा सभा की कार्यवाही से अवगत कराया जायेगा । सभा को देश के सभी संस्थानों और अन्य देशों के संस्थानों तथा अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ समुचित संपर्क रखना चाहिये । सभा और इसके परिवेश को अच्छा दिखना चाहिए और इसके क्षेत्राधिकार में जो मामले आते हैं उन्हें अच्छी प्रकार से निपटाना चाहिए और उनके साथ न्याय करना चाहिए ।

आप, माननीय सदस्यों ने मुझे यह महान सम्मान दिया । इस सभा ने मुझे अध्यक्ष के महत्वपूर्ण पद पर आसीन किया । मैं सभी माननीय सदस्यों और विशेष रूप से माननीय प्रधान मंत्री, माननीय विपक्षी नेता और अन्य सभी दलों के माननीय नेताओं का हार्दिक आभार प्रकट करता हूं । मैं सभी वक्ताओं को मेरी प्रशंसा करने तथा मुझे पूरा सहयोग देने का आश्वासन देने के लिये धन्यवाद देता हूं । केवल आपके स्नेह और सहयोग से ही यह सभा सफलतापूर्वक कार्य कर सकती है । मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे इतनी शक्ति प्रदान करें कि मैं बेहतर तरीके से अपने कर्त्तव्य को निभा सकूं ।

[4.20½ म० प०]

## प्रधान मंत्री और सदन के नेता का परिचय

**अध्यक्ष महोदय** : मुझे माननीय प्रधान मंत्री श्री पी०वी० नरसिंह राव का इस सभा से परिचय कराने में विशेष हर्ष हो रहा है। वह हम सभी के लिये परिचित व्यक्ति हैं। हम उन्हें उनके कार्य के लिए सफलता की शुभ-कामनायें देते हैं।

मैं श्री अर्जुन सिंह का सभा के नेता के रूप में परिचय कराता हूं।

माननीय प्रधान मंत्री अब मंत्रिपरिषद का परिचय करायें।

---

[4.21 म०प०]

## मंत्रियों का परिचय

**प्रधान मंत्री (श्री पी०वी० नरसिंह राव)** : महोदय, श्री अर्जुन सिंह जी मानव संसाधन विकास मंत्री हैं। इसके बाद मैं मंत्रिपरिषद के अन्य मंत्रियों का परिचय कराता हूं :

| | |
|---|---|
| श्री बी० शंकरानन्द | पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्री |
| श्री माधव सिंह सोलंकी | विदेश मंत्री |
| श्री मनमोहन सिंह | वित्त मंत्री |
| श्री एस० बी० चव्हाण | गृह मंत्री |
| श्री शरद पवार | रक्षा मंत्री |
| श्री बलराम जाखड़ | कृषि मंत्री |
| श्री सी०के० जाफर शरीफ | रेल मंत्री |
| श्री माधव राव सिंधिया | नागर विमानन और पर्यटन मंत्री |
| श्री गुलाम नबी आजाद | संसदीय कार्य मंत्री |
| श्री के० विजय भास्कर रेड्डी | विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्री |
| श्री एम०एल० फोतेदार | स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री |
| श्रीमती शीला कौल | शहरी विकास मंत्री |
| श्री सीताराम केसरी | कल्याण मंत्री |
| श्री विद्याचरण शुक्ल | जल संसाधन मंत्री |

**राज्य मंत्री (स्वतन्त्र प्रभार)**

| | |
|---|---|
| श्री अजित कुमार पांजा | सूचना और प्रसारण मंत्रालय के राज्य मंत्री |
| श्री अशोक गहलोत | वस्त्र मंत्रालय के राज्य मंत्री |
| श्री बलराम सिंह | खान मंत्रालय के राज्य मंत्री |
| श्री गिरिधर गोमांगो | खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय के राज्य मंत्री |
| श्री एच०आर० भारद्वाज | योजना और कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय के राज्य मंत्री |
| श्री जगदीश टाईटलर | जल-भूतल परिवहन मंत्रालय के राज्य मंत्री |
| श्री के० राम मूर्ती | श्रम मंत्रालय के राज्य मंत्री |
| श्री कल्पनाथ राय | विद्युत और गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोत मंत्रालय के राज्य मंत्री |
| श्री पी० चिदम्बरम | वाणिज्य मंत्रालय के राज्य मंत्री |
| श्री पी० ए० संगमा | कोयला मंत्रालय के राज्य मंत्री |
| श्री राजेश पायलट | संचार मंत्रालय के राज्य मंत्री |
| श्री संतोष मोहन देव | इस्पात मंत्रालय के राज्य मंत्री |
| श्री तरूण गगोई | खाद्य मंत्रालय के राज्य मंत्री |

**राज्य मंत्री**

| | |
|---|---|
| डा० चिन्ता मोहन | रसायन और उर्वरक मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्रीमती डी० के० तारादेवी | स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री दलबीर सिंह | वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री एडुआर्डो फैलीरो | विदेश मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री जी० वेंकटस्वामी | ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री के० सी० लेंका | कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री कमालुद्दीन अहमद | नागरिक पूर्ति और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री एम० अरुणाचलम | शहरी विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री एम० एम० जैकब | संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा गृह मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री एम० ओ० एच० फारूक | नागर विमानन और पर्यटन मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री एम० मल्लिकार्जुन | रेल मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| कुमारी ममता बनर्जी | मानव संसाधन विकास मंत्रालय (युवा कार्य और खेलकूद विभाग तथा महिला और बाल विकास विभाग) में राज्य मंत्री |
| श्रीमती मार्गरेट अल्वा | कार्मिक, लोक शिकायत तथा पेंशन मंत्रालय में राज्य मंत्री |

| | |
|---|---|
| श्री मुल्लापल्ली रामचन्द्रन | कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री पी० जे० कुरियन | उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री पी० के० थुंगन | उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री रामेश्वर ठाकुर | वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री रंगराजन कुमारमंगलम | संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा विधि, न्याय और कंपनी कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री एस० कृष्ण कुमार | पेट्रोलियम तथा प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा रक्षा मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री शांताराम पोतदुखे | वित्त मंत्रालय में राज्य मंत्री |
| श्री उत्तमभाई एच० पटेल | ग्रामीण विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री |

**उप-मंत्री**

| | |
|---|---|
| कुमारी गिरिजा व्यास | सूचना और प्रसारण मंत्रालय में उप मंत्री |
| श्रीमती के० कमला कुमारी | कल्याण मंत्रालय में उप मंत्री |
| श्री पी० वी० रंगय्या नायडु | संचार मंत्रालय में उप मंत्री |
| श्री पवन सिंह घाटोवार | श्रम मंत्रालय में उप मंत्री |
| श्री राम लाल राही | गृह मंत्रालय में उप मंत्री |
| श्री एस० बी० न्यामगौड | कोयला मंत्रालय में उप मंत्री |
| श्री सलमान खुर्शीद | वाणिज्य मंत्रालय में उप मंत्री |

**अध्यक्ष महोदय** : अब सभा कल 11 जुलाई, 1991 को राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधा घंटा बाद पुन: समवेत होने के लिये स्थगित होती है ।

**[4.26 म० प०]**

**तत्पश्चात् लोक सभा गुरुवार, 11 जुलाई, 1991/20 आषाढ़ 1913(शक) को राष्ट्रपति के अभिभाषण के आधे घंटे बाद तक के लिए स्थगित हुई ।**

---

प्रभाममुनी—287/लोक सभा, नई दिल्ली/91—7-10-91—225 पु० ।